Second Year Examination of the Three- Year Degree Course, 2001

HINDI LITERATURE

(हिन्दी साहित्य)

Paper-II

(नाटक, उपन्यास एवं अन्य गद्य विधाएँ)

Time : 3 Hours

[Maximum Marks :100]

1. नाटकीय तत्त्वों के आधार पर ध्रुवस्वामिनी' नाटक की समीक्षा कीजिए। **15**

अथवा

'प्रसाद जी नारी मनोभावों के चित्रण में बडे सिद्धहस्त है'- उक्ति के आधार पर 'कोमा' की चारित्रिक विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

2. '' 'सारा आकाश' उपन्यास का यथार्थ आज भी उतना ही प्रगासंगिक है जितना आज से चार दशक पूर्व ।'' इस कथन पर अपना मत स्पष्ट कीजिए। **15**

अथवा

'सारा आकाश' उपन्यास में चित्रित निम्न-मध्यगींय परिवार की समस्याओं का निरूपण कीजिए।

3. शिष्टाचार से आप क्या समझते है? जीवन में शिष्टाचार को अपनाना क्यों आवश्यक है? 'मधुर भाषण' पाठ के आधार पर उक्ति की विवेचना कीजिए। **15**

अथवा

'गद्य-विविधा' के किसी एक पाठ की विस्तार से समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।

4. उपन्यास व कहानी में अन्तर बताते हुए उपन्यास के तत्त्वों का निरूपण कीजिए।

अथवा

हिन्दी नाटक की विकास यात्रा पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित लेख लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए:, **5+5**

(क) हिन्दी के सामाजिक उपन्यास।

(ख) एकांकी और नाटक में अंतर।

(ग) नाटक व अभिनेयता।

(घ) संस्मरण व रेखाचित्र में अंतर।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

6. निम्नलिखित अवतरणों में से **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) प्रश्न स्वयं किसी सामने नहीं आते, मै तो समझती हूँ, मनुष्य उन्हें जीवन के लिए उपयोगी समझता है। मकड़ी की तरह लटकने के लिए अपने आप ही जाला बुनता है। जीवन का प्राथमिक प्रसन्न उल्लास मनुष्य के भविष्य में मंगल और सौभाग्य को आमंत्रित करता है। उससे उदासीन न होना चाहिए महाराज!

अथवा

रानी, तुम भी स्त्री हो। क्या स्त्री की व्यथा न समझोगी? आज तुम्हारी विजय का अन्धकार तुम्हारे शाश्वत स्त्रीत्व को ढक ले, किन्तु सबके जीवन में एक बार प्रेम की दीपावली जलती है। जली होगी अवश्य। तुम्हारे भी जीवन में वह आलोक का महोत्सव आया होगा जिसमें हृदय हृदय को पहचानने का प्रयत्न करता है, उदार बनता है और सर्वस्व दान करने का उत्साह रखता है।

(ख) अनुभव करता हूँ, जैसे मकड़ी के जाल में फंसी मक्खी सा मै किसी चक्कर में उलझ गया हूँ जो मेरी सारी जीवनशक्ति का अपहरण करके बूंद-बूंद सुखाकर बाकी बचे फोक की तरह मेरे कंकाल को छोड जायेगा कि मै खुद मर जाऊँ। देख रहा हूँ, महसूस कर रहा हूँ कि मेरी ऑखों की ज्योति व होठो की मुस्कराहट चली जा रही है, गलती जा रही है, लेकिन आखिर रोकूं कैसे?

अथवा

हर स्थिति मे, हर कहीं आदमी विकास करता है, वह पुराने करे छोड़कर नया ग्रहण करता है- इतना काफी है मानने के लिए। आदमी के पाँव इसीलिए आगे की ओर मुडे हुए बनाये गये है कि वह आगे चले, सामने बढ़े। भूत के पाँव पीछे मुडे बताए जाते है अर्थात अतीत-जीवी आदमी भूत होता है और सच पूछो तो तुम जिसे भारतीय संस्कृति भारतीय गरिमा कहते हो - मुझे यह सारी की सारी एक सिरे से इन्हीं अतीत जीवी भूतों की सभ्यता और संस्कृति लगती है।

(ग) दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती है। मेरी दुविधा भी दूर हो गई। कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। कितना भंयकर निर्णय था! पर जो मरने को तैयार हो, उसे क्या? मूर्खता अथवाबुद्धिमत्ता से किसी काम को करने के लिए कोई मौत का मार्ग ही स्वीकार कर लें और वह भी जानबूझ कर, तो फिर वह अकेला संसार से भिड़ने को तैयार हो जाता है।

अथवा

समाज की सुन्दरता दो-चार नेताओं पर नहीं बल्कि लाखों व्यक्तियों के सुधार पर निर्भर करती है। इसलिए उचित यही है कि समाज क जिन कुरीतियों से हमारी नाराजी है उन्हें सबसे पहले हम स्वयं छोड़ दें और जिन मूल्यों को हम समाज में लाना चाहते है, उन्हें भी अपने व्यक्तिगत जीवन में सबसे पहले हमीं बरतना शुरू करें। समाज को योग्य नागरिकों की जरूरत है, नेताओं की नहीं।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com